7. माता-पिता, बुजुर्गों, संत-महात्माओं को प्रणाम क्यों और कैसे करें?

MEERA

HOSPITAL

विदुर नीति

आज से 5000 साल पहले महाभारत काल में महात्मा विदुर जी ने राजा धृतराष्ट्र को जो मूल्यवान और लोक कल्याण करने वाली नीति की बातें बताई थीं, वे आज के जीवन पर भी पूरी तरह से लागू होती हैं।

षडेते ह्यवमन्यन्ते नित्यं पूर्वोपकारिणम्।
आचार्य शिक्षिताः शिष्या कृतदाराश्च मातरम् ।। 92।।
नारी विगतकामास्तु कृतार्थाश्च प्रयोजकम्।
नावं निस्तीर्णकांतारा आतुराश्च चिकित्सकम् ।। 93।।

संसार में कुछ लोग ऐसे होते ही हैं, जो सदा अपने पर उपकार करने वाले का अपना मतलब निकल जाने के पश्चात् अनादर करते हैं :-

१. शिक्षा समाप्त हो जाने पर शिष्य अपने गुरू का,

२. विवाहित पुत्र अपनी पूज्य माता का,

३. कामवासना की शांति हो जाने पर वह पुरुष उस स्त्री का,

४. कार्य निकल जाने पर आदमी अपनी मदद करने वाले का,

५. नदी की तेज धारा पार होने पर उसे कराने वाले नाविक का,

६. रोगी अपने रोग से मुक्त होने के पश्चात् अपने चिकित्सक का।

माता-पिता, बुजुर्गों, संत-महात्माओं को प्रणाम करना चाहिए, ऐसा हमारी संस्कृति में है, परन्तु आधुनिक पीढ़ी यह प्रश्न करती है कि हम प्रणाम क्यों करें ? हमें क्या फायदा होगा ?

यहाँ यह भी प्रश्न उठता है कि जो लोग प्रणाम करते आ रहे हैं, क्या वे सही तरीके से प्रणाम करते हैं ? क्योंकि प्रणाम करने के सफल परिणाम तो उनको हाथों-हाथ मिल ही जाना चाहिए, फिर उनको इच्छित लाभ क्यों नहीं मिलता है ?

ऐसा भी हो सकता है कि कहीं गलत तरीके से प्रणाम या नमस्कार करने से उनको वांच्छित लाभ नहीं हो रहा हो ?

माता-पिता को हम प्रणाम क्यों करें?

माता-पिता को हमें प्रणाम इसलिए करना चाहिए कि वे हमारे जन्मदाता हैं और उन्होंने हमें पाल-पोस कर बड़ा किया है। हमारी शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था की है। हमें योग्य बनाया है।

श्री गणेश जी ने प्रथम पूज्य बनने की प्रतियोगिता में भाग लेते समय ब्रह्माण्ड की परिक्रमा लगाने की जगह अपने माता-पिता की प्रदक्षिणा लगाई और प्रतियोगिता जीत गए, जबकि अन्य सभी देवी-देवता अपने-अपने वाहनों पर चढ़कर ब्रह्माण्ड की परिक्रमा लगाते रहे।

इस तरह से श्री गणेश जी ने भी यही आदर्श हमारे सामने रखा कि ब्रह्माण्ड में सबसे महत्वपूर्ण अपने माता-पिता ही होते हैं।

बुजुर्गों को हम प्रणाम क्यों करें ?

बुजुर्गों को हमें प्रणाम इसलिए करना चाहिए कि वे हमसे उम्र में बड़े हैं और हमसे अनुभव में भी ज्यादा हैं, परन्तु हमें यहाँ यह सावधानी रखनी होगी कि उसी बुजुर्ग को प्रणाम करें, जिसका आचरण, चरित्र और चाल-चलन अच्छा हो।

वह बुजुर्ग समाज में उच्च स्थान रखता हो, परन्तु यह जरूरी नहीं कि वह बहुत धनवान हो, क्योंकि मात्र बहुत धनवान होने से ही कोई आदरणीय नहीं हो जाता है। वह ज्ञानवान हो, उसके प्रति हमारे मन में श्रद्धा हो। वह हमारे लिए आदर्श हो, जिसके गुणों को हम ग्रहण करना चाहते हों, जिसकी ऊर्जा को हम प्राप्त करना चाहते हैं।

संत-महात्माओं को हम प्रणाम क्यों करें ?

संत-महात्माओं को सांसारिक ज्ञान के साथ ही आध्यात्मिक मार्ग का रास्ता भी पता होता है। वे तपस्या करके भरपूर उर्जावान हो जाते है। यदि उनकी निसृत उर्जा का प्रवाह हमें मिल जावे, तब हम भी अध्यात्म के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ सकते हैं।

संत-महात्माओं के आशीर्वाद में बहुत बड़ा बल होता है। निरंतर तपस्या करने से उनकी वाणी शुद्ध और पवित्र हो जाती है। इसलिए संत-महात्माओं को सच्चे मन से प्रणाम करने से उस व्यक्ति का कल्याण होता है। वह उन्नति के पथ पर अग्रसर हो जाता है।

24 घंटे में एक पल सत्य होता है।

प्रत्येक मनुष्य के 24 घंटे अर्थात 86400 सेकेण्ड के समय-काल में एक क्षण ऐसा भी आता है, जिसमें उसके द्वारा कही हुई बात सत्य हो जाती है, परन्तु यह पता नहीं होता है कि वह कौनसा पल होगा, जिसमें कही गई बात सत्य निकलेगी। इसलिए मनुष्य को सावधान रहना होगा कि कहीं उसके मुँह से कोई अनर्गल बात नहीं निकल जावे, जिससे उसका स्वयं का अनर्थ हो जावे।

माता-पिता, बुजुर्ग और संत-महात्माओं के आशीर्वाद जल्दी से फलीभूत होते हैं, इसलिए उनको प्रणाम करना चाहिए।

नमस्कार या प्रणाम कैसे करें?

नमस्कार दो तरह से किया जाता है:-

दोनों हाथों को जोड़कर दोनों अंगूठों को भ्रूमध्य के बीच में लगावे। इससे परमात्मा का आशीर्वाद हम पर बरसेगा और चैतन्यता सीधे आज्ञाचक्र में प्रवेश करके हमें देवीय ऊर्जा से भर देगी।

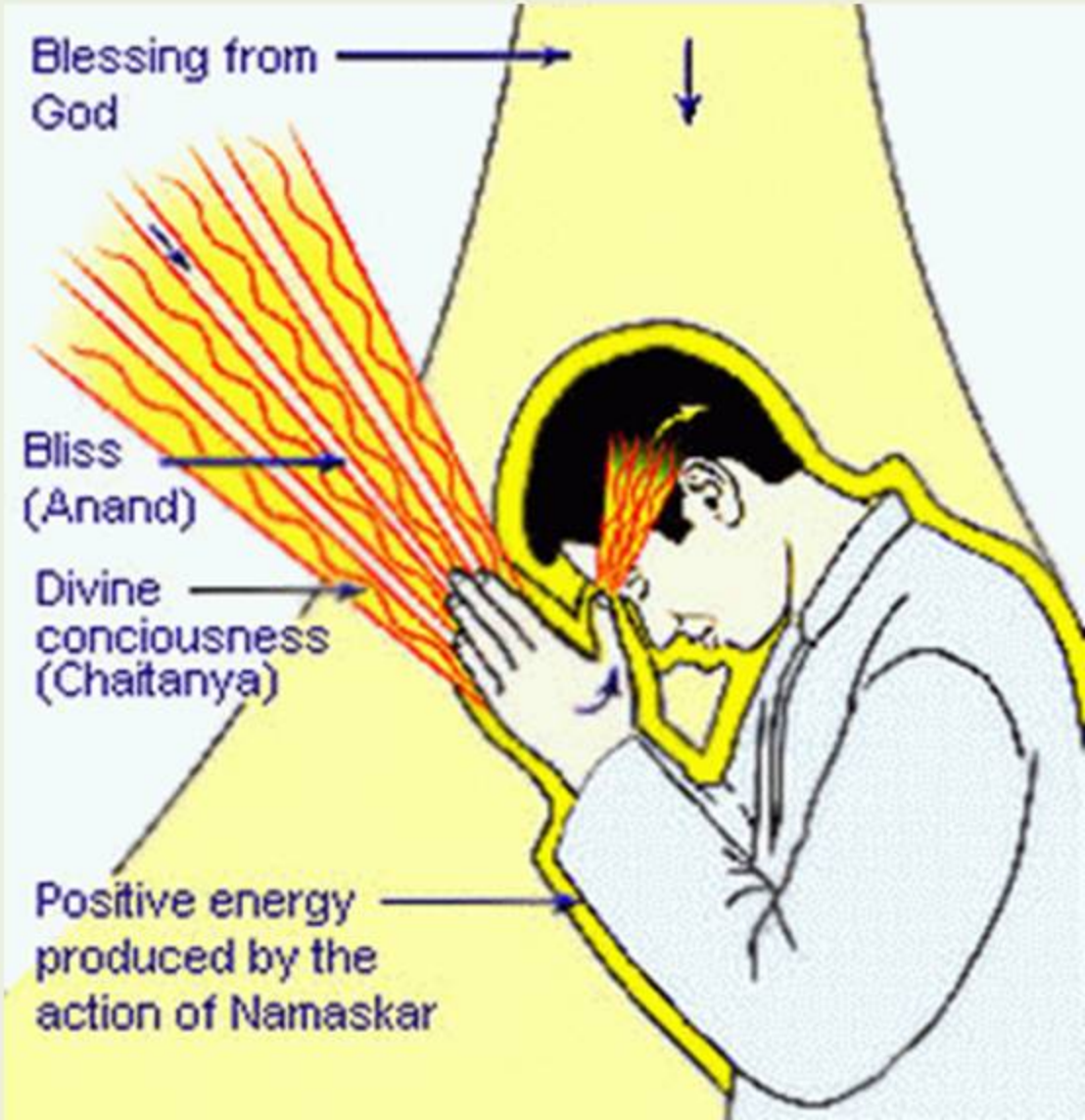

नमस्कार या प्रणाम कैसे करें?

दूसरे प्रकार के नमस्कार में, दोनों हाथों को जोड़कर दोनों अंगूठों को सीने के बीच में लगावे। इससे परमात्मा का आशीर्वाद और देवीय चैतन्यता सीधे हमारे अनाहत चक्र में प्रवेश करके हमें देवीय ऊर्जा से भर देगी।

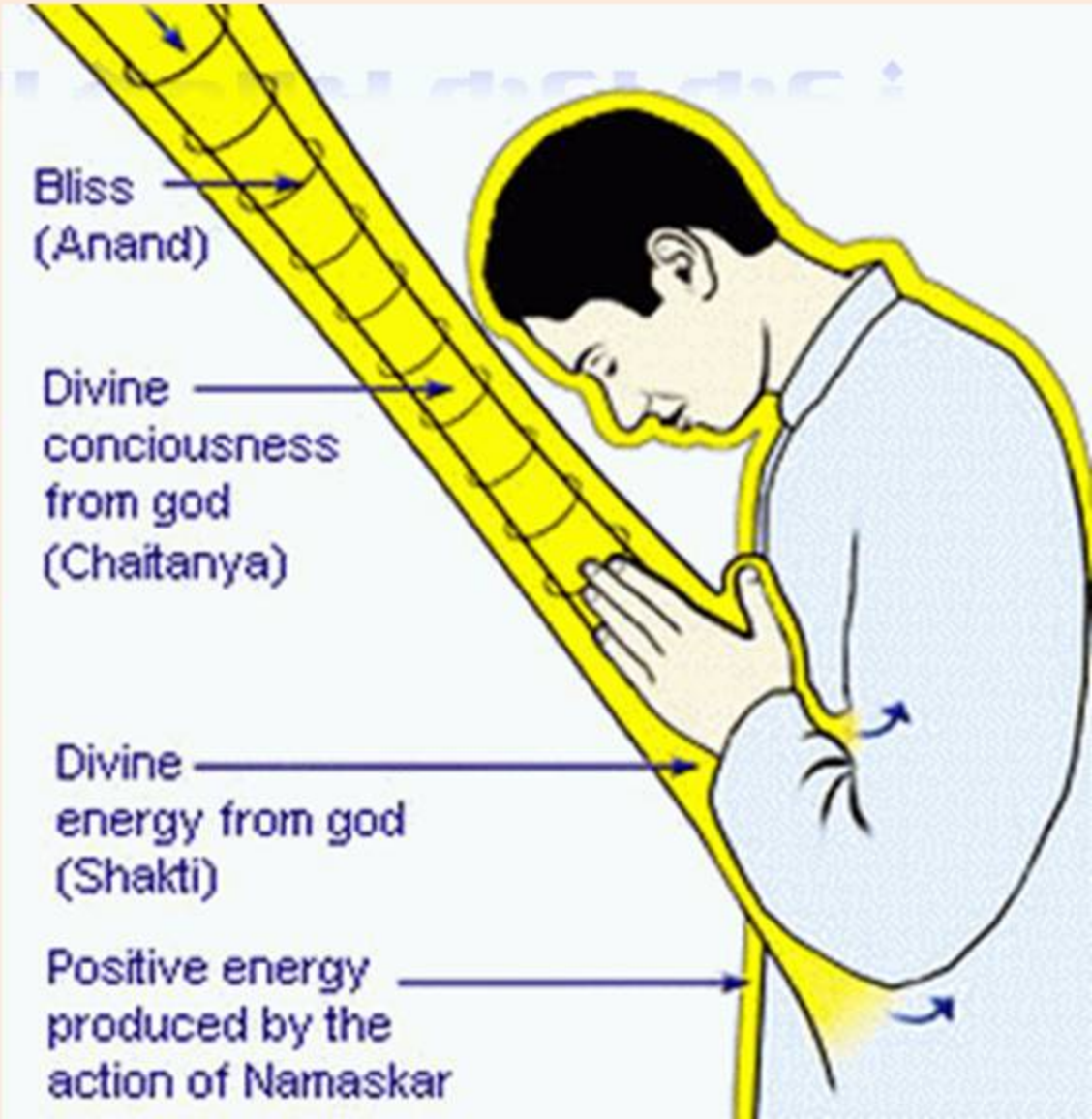

You can
Contact me on -

93148 77066

0141-220 2220
220 2748
400 1653

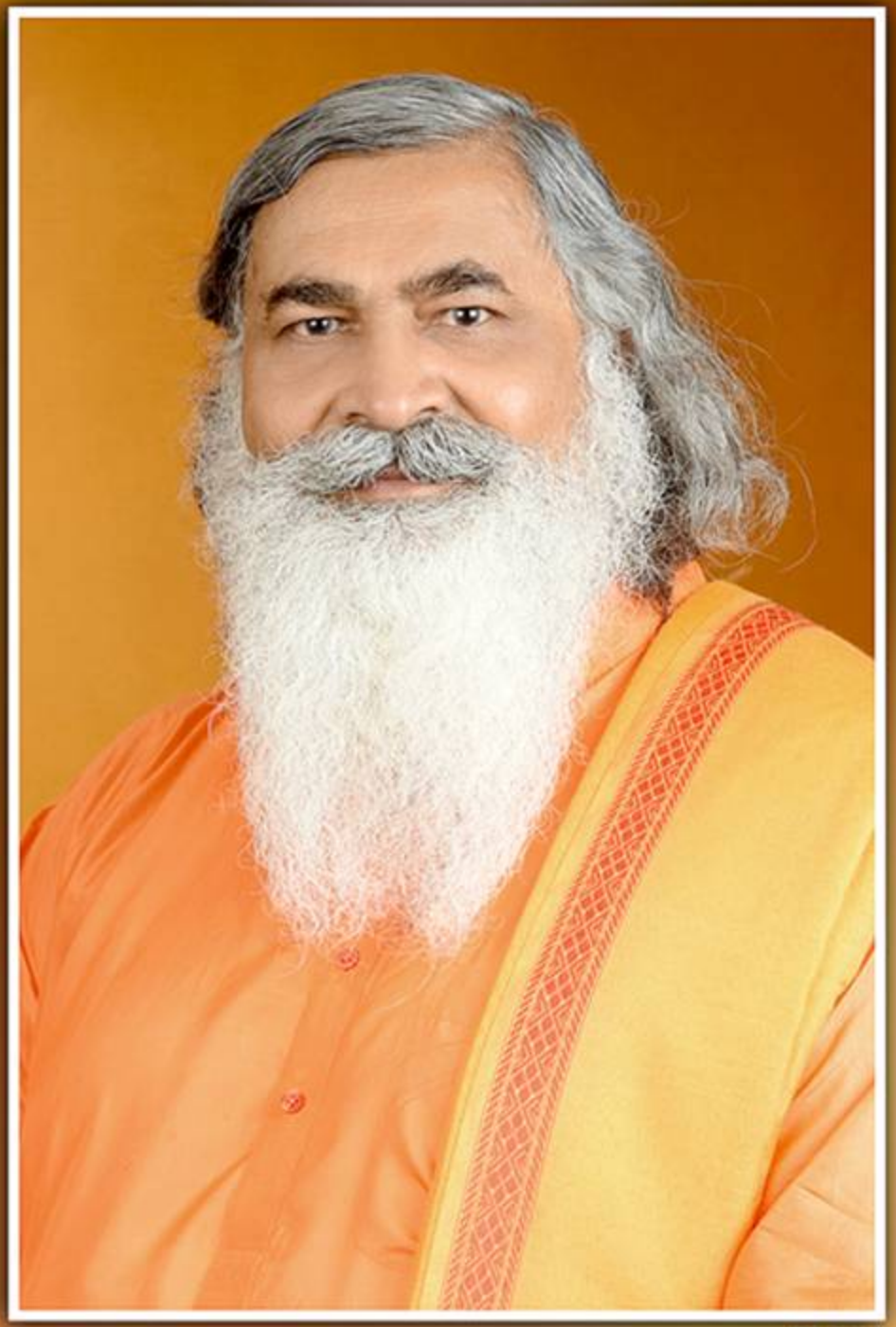

Thank You